WE
Vol 4 No. 1
June 2023

e-ISSN: 2583-2298

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में संगीत की भूमिका

अमित यादव*
कोमल**

सारांश

विश्व का सबसे बड़ा संगठन 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' अपने आरंभिक समय से ही सम्पूर्ण समाज को एक संगठन के रूप में मानता रहा हैं। आरंभ से लेकर आज तक भी संघ की स्थिति में कोई भी बदलाव नहीं आया हैं। संघ भारतीय संस्कृति एवं एक नागरिक समाज के मूल्यों को बनाए रखने के आदर्शों को बढ़ावा देता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में संगीत घोष के रूप में किस प्रकार अपनी भूमिका निभा रहा हैं इस विषय पर चर्चा की जाएगी एवं घोष में भारतीय शास्त्रीय संगीत के कौन-कौन से रागों का प्रयोग हो रहा है तथा इन रागों के स्वर एवं घोष की कौन-कौन सी रचनाओं का प्रयोग किया जा रहा है इन सभी बातों का उल्लेख किया जाएगा। घोष की रचनाएँ भारतीय संगीत के कौन से प्रमुख वाद्यों पर बजाई जा रही हैं तथा इन वाद्यों की उत्पत्ति एवं इनके वर्गीकरण के साथ अनेक बातों पर भी प्रकाश डाला गया हैं।

महत्वपूर्ण शब्द: *राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, घोष, वाद्य, संगीत, स्वर, गायन अथवा वादन, डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार, राग*

1. भूमिका

दुनिया के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितंबर 1925 को विजयदशमी के दिन केशव बलराम हेडगेवार ने की थी। इस साल विजयदशमी के दिन संघ अपने 98 साल पूरे कर लेगा और 2025 में ये संगठन 100 साल का हो जाएगा। देश, काल अथवा परिस्थिति के अनुरूप समाजोपयोगी व प्रासंगिकता के अनुरूप संघ के कार्य का विस्तार भी बड़ी सहजता से होता गया। आरंभ में व्यायाम व सामान्य चर्चा से आरंभ हुई शाखा में धीरे-धीरे शारीरिक और बौद्धिक क्षमता कार्यक्रम होने लगे। तत्पश्चात समता और संचलन का अभ्यास शारीरिक व्यायाम में धीरे-धीरे आरंभ हुआ।

2. उद्देश्य

क) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष का अध्ययन करना।
ख) घोष के अंतर्गत राग तथा रचनाओं का अध्ययन करना।
ग) संघ घोष में प्रयोग होने वाले वाद्यों का अध्ययन करना।

3. आंकड़ो का संग्रहण

प्रस्तुत शोध-पत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में संगीत की भूमिका का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया हैं। अध्ययन के लिए जानकारी सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय, नगर एवं जिला घोष प्रमुख से साक्षात्कार, जनसंपर्क, व्यक्तिगत संपर्क, पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त की गई हैं।

घोष में संचलन के समय शारीरिक विभाग ने विचार किया कि यदि संचलन के साथ घोष वाद्य का प्रयोग किया जाए तो इसकी रोचकता, एकरूपता, सांगिकता व उत्साह में चमत्कारिक परिवर्तन हो सकता है। यह स्वयंसेवकों की इच्छाशक्ति का ही परिणाम था कि संगठन की स्थापना के मात्र दो वर्ष बाद 1927 में शारीरिक विभाग में घोष भी शामिल हो गया।[1] राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय संस्कृति, संस्कृतिक एकता, और राष्ट्रीय एकता के प्रमुख संस्थानों में से एक है। इस संगठन का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय उत्कर्ष और सेवानिष्ठा को प्रमोट करना है। संगीत, जो संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में विशेष महत्व रखता है।

*शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; E-mail: ayadav@mfa.du.ac.in
**शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; E-mail: k2@mfa.du.ac.in

©WE-Faculty of Arts

4. संगीत की उत्पत्ति

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अनुसार वेद का बीज मन्त्र 'ओम्' है और ओम् ही हमारी आदि शक्तियों का मूल है:-

आकारो विष्णु रूद्दिष्ट उकारास्तु महेश्वरः।
मकारेणोच्यते बह्मा प्राणवेन मयो मतः॥[2]

अर्थात् 'ओम्' के तीन अक्षर तीन ईश्वरीय शक्तियों के द्योतक है - 'अ' अकार-ब्रह्म, 'उ' उकार-विष्णु और 'म' मकार-महेश की शक्ति का प्रतीक है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार - "यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें 'अ, उ तथा म' मिलकर जो एक समुदाय बना है, इसमें ईश्वर के बहुत से नाम आ जाते हैं। अकार-विराट, अग्नि और विश्वादि, उकार - हिरण्यगर्भ, वायु और तेजसादि तथा मकार-ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है।[3] 'ओम' से ही सृष्टि एवं नाद, नाद से स्वर और स्वर से संगीत की उत्पत्ति हुई है। विद्वानों के अनुसार भगवान ब्रह्मा से भगवान शंकर, भगवान शंकर से माता सरस्वती और माता सरस्वती से नारद को इस विद्या का ज्ञान प्राप्त हुआ। नारद ने भरत आदि विद्वानों के द्वारा इस विद्या का प्रचार-प्रसार स्वर्ग तथा भू-लोक पर किया।

यम अथवा स्वरों के एक विशिष्ट समूह को साम ग्राम कहा जाता है। इसका क्रम इस प्रकार है - कृष्ठ, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मंद्र एवं अतिस्वार्य। साम ग्राम अवरोही क्रम का था। इसके स्वर आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत के काफी और दक्षिणी संगीत के खरहरप्रिया के स्वरों से मिलते-जुलते हैं। अर्थात् साम-ग्राम में गान्धार और निषाद स्वर कोमल तथा शेष पाँच स्वर शुद्ध थे।

मन्द्रादित्रिषु स्थानेषु सप्त सप्तयमाः।
कृष्ट प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ मन्द्र अतिस्वाय॥[4]

अर्थात् मन्द्र आदि तीनों स्थानों के कृष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र तथा अतिस्वार्य ये सात-सात स्वर होते हैं। वैदिककाल में इनको मन्द्र, मध्य एवं उत्तम कहते थे और वर्तमान समय में इनको मन्द्र, मध्य एवं तार कहा जाता है। साम ग्राम का स्वरूप इस प्रकार है:-

7	1	2	3	4	5	6
कृष्ट	**प्रथम**	**द्वितीय**	**तृतीय**	**चतुर्थ**	**मन्द्र**	**अतिस्वार्य**
म	**ग**	**रे**	**स**	**ध**	**नि**	**प**

इन्हीं स्वरों का नाम षड़ज (स), ऋषभ (रे), गंधार (ग), मध्यम (म), पंचम (प), धैवत (ध), निषाद (नि) हुआ। आज यही स्वर घोष में प्रयोग किये जाते हैं। जिनका गायन अथवा वादन अनेक रचनाओं के माध्यम से इन्हीं स्वरों का प्रयोग किया जाता हैं।

5. संघ में घोष का प्रारंभिक दौर

श्री गोविन्द राव देशमुख जी जो संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी के परिचित थे उनके सहयोग से सेना के एक सेवानिवृत बैंड मास्टर से स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण दिलाया गया। वंशी के लिए पुणे के हरिविनायक दात्ये जी, शंख वादन लिए मार्तंड राव आदि स्वयंसेवकों ने वाद्य यंत्रों पर अभ्यास आरंभ किया व संघ में घोष का आरंभिक स्वरूप खड़ा हुआ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को यह अनुभाव हुआ कि पाश्चात्य शैली के बैंड्स पर अपने संगीत पर आधारित रचनाओं को बजाते समय भारतीय मन को वही आनंद और उत्साह नहीं मिलता जो आना चाहिए। उस समय, स्वयंसेवकों ने यह सोचा कि हमारे शास्त्रीय संगीत की संस्कृति और परंपरा में गहरी नाद-योग्यता है और हमें इसे अपने संगीत में प्रकट करनी चाहिए। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो हजारों वर्ष पहले महाभारत युद्ध के समय भगवान श्रीकृष्ण ने अपने पाञ्चजन्य शंख और अर्जुन ने देवदत्त शंख बजाकर विरोधी दल को विचलित कर दिया था। यह उदाहरण स्वयंसेवकों को प्रेरित किया और विचार किया गया कि हमें ऐसी रचनाएँ वाद्यों के लिए निर्माण करनी चाहिए जिनमें हमारे देश की नाद परंपरा की सुगंध को महसूस किया जा सके। इस संदर्भ में, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संगीत की नई रचनाएं विकसित की हैं जिसमें भारतीय संगीत की परंपरा और विरासत के मूलतत्त्वों का अनुभव कराती हैं।

©WE-Faculty of Arts

स्वर्गीय वापूराव और उनके साथियों ने इस मार्गदर्शन पर कार्य शुरू किया था। उन्होंने पाश्चात्य संगीत के प्रभाव से अपने संगीत को मुक्त करने का प्रयास किया और अपने शास्त्रीय संगीत के मूल्यों को बढ़ावा दिया। इस प्रयास के तहत, नई रचनाएं बनाई गयीं जो भैरवी, केदार, भूप, हंसध्वनि और आसावरी आदि रागों में निबद्ध थीं। इस उत्कृष्ट कार्य में, स्वयंसेवकों ने घोष वाद्य यंत्रों को भी स्वदेशी नाम दिए और उन्हें अपने हिंदुस्तानी संगीत परंपरा के अनुरूप बनाया। उदाहरण के तौर पर, साइड ड्रम को "आनक", बॉस ड्रम को "पणव", ट्रायंगल को "त्रिभुज", और बिगुल को "शंख" आदि नाम दिए गए। इन नामों से स्पष्ट होता है कि ये वाद्य यंत्र ढोल और मृदंग आदि के नामों की परंपरा में ही प्रतिष्ठापित करते हैं।

इस अवसर पर "जब सांघ का घोष पूरे देश में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ रहा है उस समय संघ प्रचारक सुब्बू श्रीनिवासन की चर्चा करना बेहद आवश्यक है। यूं तो किसी भी कार्य की सफलता के पीछे अनेक लोगों की मेहनत छुपी होती है लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कार्य की सफलता के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर देते हैं। घोष विभाग को नया रूप देकर उसके विकास में अपना पूरा जीवन खपा देने वाले श्री सुब्बू श्रीनिवास ऐसे ही प्रेरणा पुंज कहे जा सकते हैं।"[5] यादवराव जोशी जी जो कर्नाटक प्रांत प्रचारक थे इनकी प्रेरणा से 1962 में सुब्बू जी प्रचारक बने। सुब्बू जी के बड़े भाई जिनका नाम अनंत था, उन्होंने यह आश्वासन दिया कि वे घर के सभी काम संभाल लेंगे। "प्रचारक बनने के बाद उन्होंने क्रमशः तीनों संघ शिक्षा वर्ग का प्रशिक्षण प्राप्त किया। पुणे में 1932 से एक घोष शाखा लगती थी। घोष में रुचि होने के कारण उन्होंने छह माह तक वहां रहकर घोष का सघन प्रशिक्षण लिया और फिर वे कर्नाटक प्रांत के 'घोष प्रमुख' बनाये गये।"[6]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख श्री सुब्बू श्रीनिवास जी ने घोष वर्ग और घोष शिविरों के माध्यम से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में एक ऐतिहासिक परिवर्तन की शुरुआत की। उन्होंने देशभर में हजारों कुशल घोष वादकों को प्रशिक्षित किया और उन्होंने घोष कला में पथप्रदर्शन प्राप्त किया। यह पारम्परिक वाद्य यंत्रों जैसे शंख, आनक और वंशी के साथ शुरू हुई और आज यह यात्रा नागांग, स्वरद और अन्य आधुनिक भारतीय वाद्य यंत्रो के साथ अत्याधुनिक मौलिक रचनाओं के मधुर वादन की ओर पहुंच गई है। इस प्रयास के माध्यम से, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने घोष कला को अपने रूचिकर और प्रभावशाली परंपरागत रूप से एक नई उच्चतम स्तर तक पहुंचाया है। इससे न केवल यह ध्यान दिलाता है कि हमारी संस्कृति और परंपरा अमर हैं, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि घोष कला वाद्य जगत में सामर्थ्य और मान्यता का धारक है।

घोष वादन कला के अंतर्गत संघ ने एक समृद्ध और सुरमय संगीत परंपरा का निर्माण किया है। इन संगीतमय प्रयासों के माध्यम से, स्वयंसेवकों को गौरवशाली घोष वाद्यों का गहन ज्ञान और महान वाद्यत्व कौशल प्राप्त हुआ है। वर्ष 1982 में भारतीय नौसेना दल ने एशियाड के उद्घाटन समारोह में घोष रचना 'शिवराज' का मधुर वादन किया गया। इस प्रमुख कार्यक्रम ने घोष वाद्यों की विश्व स्तर पर पहचान बनाई। संघ के स्वयंसेवकों द्वारा बनाई गई लगभग 40 रचनाओं का वादन भी नौसेना बैंड द्वारा किया गया है। यह संघ के वाद्यों की मान्यता और उनके कलात्मक महत्व का सबूत है। आज, संघ में घोष वादकों की संख्या लगभग 70,000 है, जो अद्वितीय संगीतीय योग्यता और समर्पण के साथ संघ के उद्देश्यों को प्रतिष्ठित करते हैं।

संघ को व्यक्ति के निर्माण की पाठशाला कहा जाता है। वह व्यक्ति जो नियमित संघ की शाखा में जाता है उस व्यक्ति का विकास किस प्रकार धीरे-धीरे होता है, वह व्यक्ति खुद भी नहीं समझ पाता है। एक संघ स्वयंसेवक की सार्वजनिक जीवन में अलग पहचान बनती है, वह स्वयंसेवक कुछ भी कार्य करता है तो वह अपने पूरे लगन व निष्ठा से परिपूर्ण होकर करता है। यही मुख्य कारण है की 1925 में जब संघ का निर्माण हुआ तब से लेकर आज तक जिस क्षेत्र में भी पदार्पण किया सर्वश्रेष्ठ बनकर उभरा है। "ऐसा ही क्षेत्र है घोष वादन से जुड़ा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शाखा और शाखा में शारीरिक कार्यक्रमों का बड़ा महत्व है। शाखा पर खेल के साथ ही पथ संचलन का अभ्यास भी होता है। जब स्वयंसेवक घोष (बैंड) की धुन पर कदम मिलाकर चलते हैं, तो चलने वालों के साथ ही देखने वाले भी झूम उठते हैं। पिछले कुछ वर्षों में संघ के घोष वादकों ने अनेक वाद्य यंत्रों पर स्वदेशी संगीत रचनाओं का प्रस्तुतिकरण करके पूरी दुनिया के संगीत रसिकों व आम नागरिकों को अपनी ओर आकर्षित किया है।"[7]

इस प्रकार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संगीत की भूमिका में अपने महत्वपूर्ण योगदान को नए शब्दों में व्यक्त किया। उन्होंने अपनी विरासत को संगीत के माध्यम से समृद्ध किया और भारतीय संस्कृति को गौरवपूर्ण बनाने के लिए नई रचनाएं और संगीतिक प्रस्तुतियाँ विकसित कीं। इन रचनाओं में भारतीय संगीत की महानता और आदिकाल से आज तक चली आ रही संगीतिक परंपराओं का प्रभाव महसूस होता है। इस प्रयास के माध्यम से,

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भारतीय संगीत को एक नया जीवंत रूप दिया और उसे समृद्ध किया।

"संघ के घोष की रचनाएं सेना से ली गयी थीं, जो अंग्रेजी ढंग से बजाई जाती थीं। घोष प्रमुख बनने के बाद सुब्बू जी ने इनके शब्द, स्वर तथा लिपि का भारतीयकरण किया। वे देश भर में घूमकर विषय के विशेषज्ञों से मिले। इससे कुछ सालों में ही घोष पूरी तरह बदल गया। उन्होंने अनेक नई रचनाएं बनाकर उन्हें 'नंदन' नामक पुस्तक में छपवाया। टेप, सी.डी. तथा अतंरजाल के माध्यम से क्रमशः ये रचनाएं देश भर में लोकप्रिय हो गयीं।"[8] साथ ही, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण सामुदायिक आयोजन के रूप में मान्यता प्राप्त कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लोगों को राष्ट्रीय गर्व और भारतीय संस्कृति की महिमा को साझा करने का अवसर प्रदान करता है। संगीत के माध्यम से, लोग अपनी राष्ट्रीय भावना को प्रकट करते हैं और साथ में आनंद लेते हैं। संगीत का उपयोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संचालन दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जो संगठन के मूल्यों और सिद्धांतों को बढ़ावा देने में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में संगीत की भूमिका विविधता, उत्कर्ष, एकता, धार्मिकता, और मानवीय मूल्यों को प्रदर्शित करने का साधन है। संगीत एक ऐसी कला है जो भारतीय संस्कृति के मूल्यों, भावनाओं, और आदर्शों को स्पष्टता से प्रकट करती है। यह संगठन गीत, संगीतगायन, संगीतवादन, और संगीत के विभिन्न रूपों के माध्यम से संस्कृति के सांगीतिक धारों को संचालित करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संगीत कार्यक्रम और संगीत समारोह, भारतीय संगीत विद्यालयों, गुरुकुलों, और प्रमुख सांगीतिक प्रशिक्षण संस्थानों के साथ समन्वयित होते हैं। यहाँ प्रदर्शित किए जाने वाले संगीत कार्यक्रम और समारोह आम जनता को अद्यतन करते हैं और उन्हें भारतीय संगीत की अनूठी गहराई और सौंदर्य के साथ परिचित कराते हैं। ये कार्यक्रम विभिन्न संगीत शैलियों, जैसे शास्त्रीय, भजन, ग़ज़ल, भारतीय लोक संगीत के माध्यम से एक समृद्ध संगीतिक अनुभव प्रदान करते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संगीत कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक और सामुदायिक आयोजनों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कार्यक्रम धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सवों, राष्ट्रीय पर्वों, स्वाधीनता दिवस, गांधी जयंती, स्वामी विवेकानंद जयंती, और अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर आयोजित होते हैं। इन कार्यक्रमों में संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं, गर्व और एकता की भावना को स्थापित किया जाता है। इसके अलावा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संगीत समूह राष्ट्रीय स्तर पर संगीत संघों, कला अकादमियों और संगीत शैक्षिक संस्थानों के साथ सहयोग करते हैं। ये समूह विभिन्न संगीत संस्थानों के साथ संगीत कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और गुरुकुलों का आयोजन करके संगीत शिक्षा को बढ़ावा देते हैं। इसके माध्यम से युवाओं को संगीत शिक्षा की महत्वपूर्णता पर जागरूक किया जाता है और उन्हें भारतीय संगीत परंपरा के मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ परिचित किया जाता है। संघ के संगीत समूह अभियांत्रिकी, गीत, ध्वनि और ताल के समन्वय को प्रदर्शित करते हैं और भारतीय संगीत के विभिन्न रंगों और भावों को उजागर करते हैं। इन संगीत समूहों के द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले संगीतीय प्रदर्शन और संगीत का आनंद लेने के माध्यम से, लोग सामूहिक रूप से संगीत का आनंद लेते हैं और साथ मिलकर राष्ट्रीय स्वाभिमान और संगठन भाव को बढ़ाते हैं। संक्षेप में कहें तो, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में संगीत की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी ने कहा कि "भारत का शास्त्रीय संगीत विश्व को सत्य, करुणा और पवित्रता की ओर ले जाता है। जहां विश्व में संगीत में मनोरंजन पक्ष पर ध्यान रखा जाता है वहीं हमारे देश में परंपरा से संगीत को सत्य, करुणा और पवित्रता उत्पन्न करने वाला माना जाता है। (डॉ. भागवत जी ने रविवार को वैशाली नगर में स्थित चित्रकूट स्टेडियम में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विशाल "स्वर गोविंदम" कार्यक्रम को संबोधित किया।"[9] संगीत के माध्यम से समान रस का भाव पैदा होता है। सरसंघचालक जी ने कहा कि "हमारे संगीत की विशेषता के कारण ही संघ स्थापना के दो-तीन साल में ही कार्य पद्धति में संगीत को स्वीकार कर लिया गया था। गाने वाले और सुनने वालों में संस्कार होते हैं। सामूहिक स्वर में, सबके साथ रहने से संस्कार उत्पन्न होते है, समस्वरता से समरसता का भाव पैदा होता है। हम विविधता में एकता को देखें, इसलिए संगीत का चलन संघ में हैं।" संघ में घोष वादकों को संगीत अभ्यास एवं संचलन के लिए कोई धनराशि प्राप्त नहीं होती है। अनेक आयु वर्ग और भिन्न-भिन्न कार्यक्षेत्र के वादक पेशेवर रूप से वादक नहीं होते है। इनके द्वारा किया गया वादन राष्ट्र कार्य के लिए इन्हें योग्य बनाता है। स्वयंसेवकों द्वारा अपनी जेब से खर्च करके राष्ट्र के हित में संघ की योजना के अनुसार रचनाओं का वादन किया जाता है। ये वादक स्वयं के बड़प्पन या मनोरंजन के लिए

© WE - Faculty of Arts

नहीं अपितु अपने राष्ट्र की सेवा के प्रति संगीत का वादन करते है। हमारा राष्ट्र हमें बहुत कुछ प्रदान करता है अतः हमें भी राष्ट्र को कुछ देना चाहिए। स्वयंसेवक जो अपने जीवन में सीखते हैं उसे देश के हित में लगा देते है।

डॉ. भागवत जी ने कहा कि "पहला संस्कार बिना स्वार्थ कुछ देना होता है। दुनिया कहती थी हम महफ़िल में गा सकते हैं, सामूहिक गायन-वादन कर सकते हैं, लेकिन हमारा संगीत शौर्य, बल पैदा करने वाला नहीं है। ये बात हमें खलती थी कि प्रांगण में जमा हो कर रण संगीत गायन की परंपरा हमारे यहां नहीं है। हमारे पास संचलन के लिए संगीत नहीं था। हमने अंग्रेजों से रचनाएं उधार ली। हमारे राष्ट्र संगीत की सूक्ष्म बातें तैयार की और फिर भारतीय रागों पर आधारित रचनाएं तैयार की। भारतीय राग और ताल में लिपिबद्ध संगीत हमारे द्वारा तैयार किया गया।" विश्व की सभी अच्छी बातों को भारत स्वीकार करता है लेकिन किसी पर निर्भर होना नहीं है। अन्य बात आत्मसंयम की है। जिस प्रकार संगीत एवं उनकी रचनाएँ निर्धारित की जाती है, उसी प्रकार सामूहिक रुप से उसका वादन किया जाता है। वादक स्वयं की इच्छानुसार वादन नहीं कर सकता। स्वयंसेवक को संयम रखते हुए सामूहिक रुप से संगीत का अभ्यास करना होता है। सरसंघचालक जी ने कहा कि "संगीत समरसता का संस्कार है। सुर और ताल मिल कर चलते हैं तभी संगीत तैयार होता है। सबके सामूहिक हितों का ध्यान रखते हुए समरसता के साथ संस्कार पैदा किया जाता है। भारत को विश्व गुरु बनना है। हम सब हिंदू हैं, हमारा हिंदू राष्ट्र है। ये नाम किसी जाति के नाम से पैदा नहीं हुआ वरन् "वसुधैव कुटुंबकम", संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने के सिद्धांत पर चलने के कारण हमें हिन्दू नाम मिला है।" संसार में अनेक राष्ट्रों की अपनी अलग पहचान है, परंतु विश्व में अखंड भारत की ही पहचान हिंदू नाम से है क्योकि हमारी संस्कृति पूरे विश्व का कल्याण चाहने वाली और सभी के प्रति अपनत्व का भाव रखने वाली सनातन संस्कृति है। संघ का विचार है कि सभी में समानता होनी चाहिए परंतु दुर्भाग्य से हमारे यहां अंग्रेजों द्वारा देश को तोड़ने के लिए दिया गया मंत्र जातिभेद और अस्पृश्यता का कलंक आज भी हमारे यहाँ है। इन विशेष कारणों से हमारा एक बड़ा हिस्सा पिछड़ गया। इस बुराई को अखंड भारत की जड़ मूल से बाहर फेंकने की आवश्यकता है। बाबा साहब के विचार थे कि अगर देश में समानता और स्वतंत्रता लानी है तो हम सभी को समानता रखनी होगी। हमारा भी यही मानना है कि मानवता, बंधुता, समरसता का रूप है। संघ ने भारतीय संगीत की सामर्थ्य जानते हुए ही रण संगीत को स्वयं से जोड़ा है।

उन्होंने कहा कि "देश की उन्नति का काम करने का ठेका किसी ने भी नहीं लिया है, यह काम सभी का है। हम सभी को इसके लिए प्रयास करने होंगे। हमें संस्कारों को ग्रहण कर सबल, सुरक्षित और सामर्थ्यवान देश बनाने का प्रयास करना होगा। जहां संस्कार नहीं वहां शक्ति का दुरुपयोग होता है। लेकिन संस्कार युक्त शीलवान पुरुष, पीड़ा हरने का काम करते हैं, सुरक्षा का काम करते हैं। उन्होंने स्वयंसेवकों और आमजन से संपूर्ण दुनिया को सुख संपन्न बनाने और भारत को विश्व गुरु बनाने का प्रयास करने का आह्वान किया।"[10]

6. घोष में प्रयोगात्मक वाद्यों का इतिहास

घोष में प्रयोग होने वाले वाद्यों का ऐतिहासिक दृष्टिकोण देखा जाए तो हमें यह प्राप्त होता है कि, हमारी सांगीतिक परम्परा में सहस्रों वर्ष पूर्व भी संगीत के वाद्यों का विधिवत वर्गीकरण प्राप्त होता है। वैदिककाल में वाद्यों का वर्गीकरण नहीं मिलता, परन्तु चारों प्रकार के वाद्यों का उल्लेख सप्रमाण मिलता है। रामायण तथा महाभारत में वादित्र के अन्तर्गत ही तत, अवनद्ध, घन तथा सुषिर वाद्यों का अन्तर्भाव है। 'पाणिनि की अष्टाध्यायी' में वृन्द-वादन के लिए 'तुर्य' शब्द का प्रयोग पाया जाता है, जिसमें सभी वाद्यों का अन्तर्भाव है। बौद्ध साहित्य में तत, वितत्, घन तथा सुषिर इन चुतर्विध वाद्यों के प्रचुर उल्लेख प्राप्त होते हैं। हरिवंश पुराणों में भी इन चारों प्रकार के वाद्यों का वर्णन मिलता है। विष्णुधर्मोतर पुराण के उन्नीसवें अध्याय में तत, सुषिर, घन और अवनद्ध चार प्रकार के वाद्यों का उल्लेख किया गया है। वाद्यों के बारे में लिखे गए प्रथम ग्रन्थ के प्रथम वार्ताकार नारद और स्वाति हैं। यह तथ्य भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में वर्णित किया है :-

मृदंग पणवानाञ्य दर्दुरस्थ तथैव च।
गान्धर्वञ्चैव वाद्यञ्च स्थातिना नारदेन च ॥[11]

अर्थात् स्वाति और नारद ने मृदंग, पणव तथा दर्दुर आदि अवनद्ध, तन्त्री और अन्य वाद्यों के विस्तापूर्वक सुस्पष्ट लक्षण और वादन क्रमों का वर्णन किया है। उन्हीं का अनुसरण करके भरत ने पुष्कर आदि वाद्यों की उत्पत्ति, बनाने का क्रम और वादन क्रम बताया है। संगीत मकरंद में पंचविध नाद बताया गया है- 1. वीणा आदि नखज 2. वंश आदि वायुज 3. मृदंग आदि चर्मज 4. ताल आदि लोहज तथा 5. शरीरज। लोहज शब्द से कांस्य तथा ताँबे आदि को भी

समझना चाहिए। संगीतोपनिषत्सारोद्धारा में आहत और अनाहत, दण्ड और हाथ के आघात से बजने वाले तथा वायु के आघात से बजने वाले वायों के पाँच प्रकारों का उल्लेख किया गया है तथा साथ ही इनको 'पाँच शब्द' कहा है।

घोष में प्रयोग होने वाले लगभग वाद्यों के नाम हमें प्राचीन वैदिककालीन समय से ही प्राप्त होते हैं, जिनका वर्णन इस प्रकार हैं –

ऋग्वेद में सबसे प्रसिद्ध तार वाद्य 'बाण' अथवा 'वाण का वर्णन मिलता है, 'बाणस्य सप्त धातु' में वाण इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। सायण के अनुसार वाण शब्द का अर्थ 'सौ' तारों वाली वीणा है।[12] अवनद्ध वाद्यो में दुन्दुभि का स्थान प्रमुख है। इसके अतिरिक्त अन्य भी कई प्रकार के वाद्यो का वर्णन ऋग्वैदिक साहित्य में पाया जाता है।

यजुर्वेद में वीणा के अतिरिक्त अन्य भी कुछ वाद्यो का वर्णन किया गया। कुछ मुख्य वाद्य इस प्रकार है-आडम्बर, वीणा, तुणव, शंख, पाणिघ्न तथा तलब आदि। आडम्बर भेरी वर्ग का एक अवनद्ध वाद्य है। चारों और जो ध्वनि को जोर से फेंके, वह आडम्बर है। वीणा तन्त्री वाद्यों में सर्वप्रमुख है। वीणा शब्द का सर्वप्रथम वर्णन यजुर्वेद में ही मिलता है। शंख फूंक कर बजाया जाने वाला वाद्य है। यह आज भी इसी नाम से प्रचलित है। पाणिघ्न का अर्थ हाथ को मारने अर्थात् ताली देने वाला है। तलब तल से सम्बन्धित है। सम्भवतः यह मंजीरे जैसा कोई वाद्य रहा होगा।

अथर्ववेद में वाद्यो के अन्तर्गत आघाट, कर्करी तथा दुन्दुभि आदि का उल्लेख अथर्ववेद में अनेक स्थानों पर उपलब्ध होता है।

सामवेद में नाड़ी भी एक सुषिर वाद्य था, जो फूंककर बजाया जाता था। वीणा सम्भवतः इस काल के सर्वाधिक प्रचलित वाद्यो में से थी।[13] नारद ने दो प्रकार की वीणाएं बताई है - गात्र एवं दारवी वीणा। दुन्दुभि अथवा भूमि दुन्दुभि इस काल के सर्वाधिक प्रचलित अवनद्ध वाद्य हैं। ऋग्वेद में दुन्दुभि के बनाने की विधि भी बताई गई है। भेरी, दुन्दुभि, भूमिदुन्दुभि, नन्दीरति, मृदंग एवं पणव अवनद्ध वर्ग के प्रमुख वाद्य हैं। 'नन्दीरति' एक प्रकार का ढोल ही प्रतीत होता है। इसका उपयोग नगर घोषणा तथा समय सूचना इत्यादि के लिए होता था। मृदंग ढोल के आकार वाला एक प्रचलित वाद्य था। इसका भरत के नाट्यशास्त्र में विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। यह वाद्य आज भी प्रचार में है। पणव एक प्रकार का छोटा ढोल था, जिसे 'केटल ड्रम' कहा जा सकता है। भेरी वैदिक साहित्य का एक प्रचलित वाद्य है। इसकी ध्वनि तीव्र एवं गंभीर मानी जाती है।

7. वाद्य वर्गीकरण

सुषिर वाद्य - वंश, पाव, पाविका, मुरली एवं मधुकरी। श्रृंग श्रेणी के वाद्यों में काहला, तुण्डुकिनी तथा शंख आदि उल्लेख योग्य हैं। 'वादन क्रिया के आधार पर इनके मुख्यरूप से दो भेद हैं-

1. मुंह से फूंककर बजाए जाने वाले वाद्य - वंशी, मुरली, पाविका, पुंगी, शहनाई तथा नागस्वर आदि।

2. अन्य किसी साधन से बजने वाले वाद्य - हारमोनियम तथा स्वरपेटी आदि ।

अवनद्ध वाद्य - चमड़े के मुख्य वाद्य इस प्रकार हैं-पटह, मर्दल, हुडुक्का, घट, ढक्का, रुंजा, डमरू, डक्का, दुन्दुभि, भेरी तथा तुम्बकी आदि ।' वादन क्रिया के आधार इनके पांच उपवर्ग बन सकते हैं-

1. दोनों हाथों के पंजों अथवा उंगलियों से बजाए जाने वाले वाद्य - पखावज, मृदंगम, तबला, ढोलक, खोल, नाल तथा मादल आदि।

2. एक हाथ की उंगलियों से बजने वाले वाद्य - हुडुक, खंजीरा तथा दायरा आदि।

3. शंकु से बजाए जाने वाले वाद्य - नगाड़ा, धौंसा, दमाका तथा डाक आदि।

4. एक ओर हाथ से तथा एक ओर डण्डी से बजाए जाने वाले वाद्य - बड़ा ढोल तथा पटह आदि।

5. कुण्डी की चोट से बजने वाले वाद्य - डमरू तथा डक्का आदि ।

घन वाद्य - घनवाद्यों में-कांस्यताल, घंटा, क्षुद्रघंटिका, जयघण्टा, कम्रा, शुक्ति तथा पट्टी आदि प्रमुख हैं। वादन क्रिया के आधार पर इनको तीन वर्गों में बांटा जा सकता है-

1. दो हिस्सों को परस्पर टकराकर बजाए जाने वाले वाद्य - झांझ, मंजीरा, करताल तथा कम्रिका आदि।

2. डण्डी अथवा लकड़ी या हथौड़ी के प्रहार से बजने वाले वाद्य - घण्टा, जयघण्टा, वियज घण्टा, झांझ तथा बड़ी झांझ आदि।

©WE Faculty of Arts

3. हाथ हिलाकर बजाए जाने वाले वाद्य-इस उपवर्ग में वे सभी वाद्य आते हैं, जिनमें किसी खोखले पदार्थ के भीतर कंकड़ आदि भरा रहता है-झुनझुना तथा रम्भा आदि। बनावट की दृष्टि से इनके अनेक भेद हैं, जिनको वर्गीकृत नहीं किया जा सका है।

तत वाद्य - वादन क्रिया के आधार पर तत वाद्यों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है-

1. उँगली से बजाए जाने वाले वाद्य - स्वर मण्डल तथा तम्बूरा आदि।

2. कोण अथवा त्रिकोण से बजाए जाने वाले वाद्य - सितार, सरोद, रूद्र वीणा, विचित्र वीणा तथा गोट्टूवाद्यम आदि।

3. गज से रगड़कर बजाए जाने वाले वाद्य - सारंगी, रावणहत्था, इसराज तथा दिलरुबा आदि।

4. डण्डी से प्रहार करके बजाए जाने वाले वाद्य - सन्तूर तथा कानून आदि।

8. घोष रचनाओं में प्रयोग होने वाले राग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में घोष की रचनाएं मुख्यत चुने हुए लगभग 40 रागों पर आधारित हैं। जिन रागों पर रचनाएँ बजायी जाती हैं वे राग हैं - भूपाली, जोग, हंसध्वनि, मालकौंस, बागेश्वरी, मियां मल्हार, शंकरा, बिलासखानी तोड़ी, भीमपलासी, शुद्ध कल्याण, पटदीप, भैरवी, यमन, खमाज, हिंडोल, दरबारी कान्हडा, भटियार, विभास, किरवानी, अल्हैया बिलावल, मधुमाध सारंग, वृंदावनी सारंग, कलावती, चारुकेसी, चंद्रकौंस, मारवा, छायानट, दुर्गा, हमीर, पूरिया धनाश्री, काफी, रागेश्री, केदार, तिलंग, शिवरंजनी, पहाड़ी, मांड, तिलक कामोद, देशकार, धानी, आसावरी, भूप आदि सभी रागों पर घोष की रचनाएँ रचित हैं। उपर्युक्त कुछ रागों के आरोह तथा अवरोह इस प्रकार है -

राग –	**आरोह** –	**अवरोह** –
भूपाली -	स रे ग प ध सं	---------- सं ध प ग रे स
जोग -	.नि स ग म प नि सं	---------- सं नि प म ग म ग स
हंसध्वनि -	स रे ग प नि सं	---------- सं नि प ग रे स
मालकौंस -	स ग म, ध नि सं	---------- सं नि ध म, ग म ग स
बागेश्वरी -	स म ग, म ध नि सं	---------- सं नि ध, म ग, म ग रे स
मियाँ मल्हार -	रे म रे स, म रे प, नि ध नि सं	---------- सं नि प म प, ग म रे स
शंकरा -	स ग प, नि ध सं	---------- सं नि प, नि ध सं नि प, ग प ग स
बिलासखानी तोड़ी -	स रे ग प ध, नि ध सं	---------- सं रें नि ध, म ग रे ग रे स
भीमपलासी -	.नि स, ग म प, नि सं	---------- सं नि ध प म ग रे स
शुद्ध कल्याण -	स रे ग प ध सं	---------- सं नि ध प मं ग रे स
पट्टदीप -	नि स ग म प नि सं	---------- सं नि ध प म ग रे स
भैरवी -	स रे ग म प ध नि सं	---------- सं नि ध प म ग रे स
यमन -	नि रे ग मं प ध नि सं	---------- सं नि ध प मं ग रे स
खमाज -	स ग म प, ध नि सं	---------- सं नि ध प, म ग रे स
हिंडोल -	स ग मं ध, नि ध सं	---------- सं नि ध, मं ग स
दरबारी कान्हड़ा -	.नि स रे रे ग ss रे स, म प ध नि सं	------ सं ध नि प, म प, गss म रे स
भटियार -	स ध प ध म प ग मं ध सं	---------- रें नि ध प, म प ग रे स
विभास -	स रे ग प ध सं	---------- सं ध प ग रे स
किरवानी -	स रे ग म प ध नि सं	---------- सं नि ध प, म ग रे स
अल्हैया बिलावल -	स रे ग रे ग प, ध नि सं	---------- सं नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे स

©WE-Faculty of Arts

मधुमाध सारंग - स रे म प नि सं ---------- सं नि प, म, रे स

वृन्दावनी सारंग - स रे म प, नि सं ---------- सं नि प, म रे स

कलावती - स ग प ध नि ध प ध सं ---------- सं नि ध प, ग प ध प, ग स

चारुकेशी - स रे ग म प, ध नि सं ---------- सं नि ध प, म ग रे स

चंद्रकोश - .नि स ग म, ध नि सं ---------- सं नि ध म, ग स

मारवा - स रे ग मं ध नि ध, सं ---------- रें नि ध, मं ग रे, स

छायानाट - स रे ग म प, नि ध सं ---------- सं नि ध प मं प ध प, ग म रे स

दुर्गा - स रे म प, ध सं ---------- सं ध प म रे स

हमीर - स रे स ग म ध, नि ध सं ---------- सं नि ध प, मं प ध प, ग म रे स

पुरिया धनाश्री - नि रे ग, मं प, ध प नि सं ---------- रें नि ध प, मं ग, मं रे ग, रे स

काफ़ी - स रे ग म प ध नि सं ---------- सं नि ध प म ग रे स

घोष वाद्यों में बजने वाली रचनाएं संघ की संगीत परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये रचनाएं न केवल एक आनंददायक संगीतीय अनुभव प्रदान करती हैं, बल्कि उनमें संघ के सिद्धांत, भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता के भाव भी व्यक्त होते हैं। इन रचनाओं के माध्यम से, संघ के स्वयंसेवक एक आनंदमय और प्रभावशाली संगीतीय प्रस्तुति प्रदान करते हैं। इन रचनाओं में ध्यान से तैयार की गई ताल और लय भी अद्वितीयता और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संघ ने घोष वाद्यों को स्वदेशी भाव से भरकर उन्हें अपनी संगीत परंपरा के अनुकूल बनाया है। ये रचनाएं संघ के मूल्यों, संस्कृति के प्रतीकों और राष्ट्रीय भावनाओं को स्पष्ट करती हैं।

घोष में बजने वाली मुख्यतः रचनाओं के नाम निम्नलिखित प्रकार से है –

ध्वजारोपणम्, मीरा, भूप, तिलङ्ग, शिवरञ्जनी, बङ्गश्री (शिवरञ्जनी), पहाड़ी, गोवर्द्धन, हंसध्वनि, श्रीपाद (माण्ड), तिलककामोद, सुरभि (बागेश्री), शरावती (माण्ड), देशकार, धानी, वलचि (कलावती), पारिजातम्, विजया (आसावरी), गणेश (सारङ्ग), हररञ्जनी (शिवरञ्जनी), शङ्करा, राजश्री (हंसध्वनि), माधवनित्या, माधवानिल, जयोस्तुते, श्रृंग – अरविन्द, शिवराजः (भूप), कर्नाटकी (शिवरञ्जनी), समर्पण (बागेश्री - २), कल्याण, देवदत्त, बागेश्री, प्रशान्ति (तिलककामोद), श्रीराम, सोनभद्र, चेतक, अजेय, दशमेश, दीप, मरुधर, मेवाड़, परमार्थ, मङ्गला, पाञ्चजन्य, प्रतिध्वनि, रणजित, श्रीनिवास, साकेत, यादव, विनायक, सागर, वीरश्री, प्रताप, मार्तण्ड, तथागत, वर्धमान, ब्रह्मपुत्र, तेजस, प्रयाग, कावेरी, निरञ्जन, दत्तात्रेय, वरदा, स्वागत प्रणाम, ध्वज प्रणाम, आद्यसरसंघचालक प्रणाम, प्रबोधन, शारीरिक- बौद्धिक सूचना, केदार, भूप वंशी - आनक संगत, प्रसाद, अरविन्द आदि।[14]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संगीत के माध्यम से भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय भावनाओं को प्रोत्साहित करता है और नवयुवकों को संगीत के माध्यम से समाज सेवा और राष्ट्र सेवा की महत्वपूर्णता को समझाता है। संगीत के माध्यम से, युवा सदस्य आपसी समरसता, सहगामीता, और सहप्रेम के आदर्शों को सीखते हैं और राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने में सहायता करते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संगीत समूह और कलाकार भारतीय संगीत परंपरा के महान कलाकारों के प्रभाव को आदर्श बनाकर अपने अभियांत्रिकी, समय-संगठन और रचनात्मकता कौशल का प्रदर्शन करते हैं। वे अन्य संगठनों के साथ गायन और वादन कार्यक्रमों में सहभागी होते हैं और अन्य आयोजनों में संगीत का प्रदर्शन करके संगठन की पहचान बनाए रखते हैं। इसके साथ ही, संघ संगीत समूह और संगीत के प्रशिक्षकों के माध्यम से नवाचारी और अभियांत्रिकी गीतों को विकसित करते हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित किए जा सकते हैं।

9. निष्कर्ष

परिणामस्वरूप हम यह कह सकते है कि विश्व का सबसे बड़ा संगठन 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' में संगीत घोष के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हैं। संगीत एक महान शक्ति है जो एक राष्ट्र के लोगों को एकजुट करने की क्षमता रखती है। घोष एक माध्यम है जिसके द्वारा लोगों की भावनाएं, विचारों और संवेदनाएं एकदृष्टि में आती हैं और एक-दूसरे के बीच संवाद स्थापित करती है। संगीत न केवल एक मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह राष्ट्रीय

©WE-Faculty of Arts

एकता का अनोखा प्रतीक है जो विभिन्न सांस्कृतिक और जातीय मार्गों को पार करके लोगों को जोड़ता है। भारत में संगीत न केवल एक कला के रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। संगीत एक ऐसी कला है जो सभी मानवीय अनुभवों, भावनाओं और संवेदनाओं को समाहित करने का अद्वितीय माध्यम है। संगीत मन, हृदय और आत्मा के बीच एक गहरा संबंध स्थापित करता है तथा घोष के द्वारा संगीत अलग-अलग समुदायों और राष्ट्रों के बीच एकता और समानता का माध्यम बनता है।

सन्दर्भ:

1. उपाध्याय, डॉ. रामकिशोर, पाञ्चजन्य लेख, दिल्ली (भारत), बुधवार, 1 दिसम्बर 2021
2. उमेश जोशी, भारतीय संगीत का इतिहास, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, पृ.14
3. स्वामी दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थप्रकाश, प्रथम समुल्लास, पृ.61
4. ठाकुर जयदेव सिंह, भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ.54
5. विश्व संवाद केंद्र भोपाल समाचार पत्रिका https://www.samvad.in/Encyc/2021/11/22/Swar-Sadhak-Sangam-Sangh-Pracharak-Subbu-Srinivasan-who-surrendered-his-whole-life-for-the-sake-of.html
6. वही
7. वही
8. वही
9. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आधिकारिक वेबसाइट से, 07 नवंबर 2017 https://www.rss.org/hindi/Encyc/2017/11/7/SwaraGovindam.html
10. दैनिक जागरण पत्रिका, कानपुर, सोमवार, 10 अक्टूबर 2022, 06:11 PM (IST)
11. भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र ग्रंथ
12. ऋग्वेद, 1.85.10, सायण भाष्य के अनुसार
13. बृहदारण्यक उपनिषद, 2.4.6/4.5.6/ 4.5.7-8
14. घोषतरंग वंशी, शङ्ख एवं आनक पुस्तिका से

©WE-Faculty of Arts